Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण महिलाओं पर विकास योजनाओं का सामाजिक प्रभाव

डॉ. जितेन्द्र कुशवाहा*

* अतिथि विद्वान (समाजशास्त्र) म.गा.चि.ग्रा.वि.वि., चित्रकूट, सतना (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं, जिससे आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ी है। जननी सुरक्षा योजना और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं ने मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाई है। और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बेहतर की है। योजनाओं से जुड़ी ट्रेनिंग और प्रचार प्रसार से महिलाओं में शिक्षा और अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है महिलाओं की पंचायत और स्वयं सहायता समूह में भागीदारी बढी है, जिससे वे सामाजिक निर्णय में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। महिलाओं के विकास हेतु योजनाओं का निरंतर मूल्यांकन एवं जागरूकता और स्थानीय सहभागिता आवश्यक है।

प्रस्तावना – किसी भी राष्ट्र का उत्थान नारी शक्ति के बिना संभव नहीं है। दिशा जब तक समावेशी नही होगी तब तक वास्तविक प्रगति संभव नही है। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के उत्थान एवं भागीदारी के बगैर कोई भी विकास योजना सफल नही मानी जा सकती है। ग्रामीण महिला न केवल परिवार की रीढ़ होती है। बल्कि समाज की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना की भी महत्वपूर्ण आधार शिलाएं धुरी होती है।

नारी स्वयं सृष्टा है, यह सर्वभौमिक सत्य है। भारत देश में शुरू से ही नारी के इस मातृरूप को आदर एवं सम्मान से देखा गया है

ग्रामीण विकास हेतु संचालित विकास योजनाएँ– ग्रामीण महिलाओं हेतु विकास योजनाओं का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाना एवं आर्थिक स्थिति सुधारना है।

1. राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
2. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना
3. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना
4. सुकन्या समृद्धि योजना
5. लाडली लक्ष्मी योजना

अध्ययन की आवश्यकता– म.प्र. में विशेष रूप से समाजशास्त्रीय मापदण्डों के संदर्भ में महिलाओं के स्थिति पर ग्रामीण विकास योजनाओं के प्रभाव पर कोई व्यवस्थित अध्ययन नही किया गया है। इसलिए महिलाओं की स्थिति में सुधार की आवश्यकता है।

शोध के उद्देश्य :

- ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना।
- हितग्राही महिलाओं पर विकास योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
- विकास से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ:

- विकास योजनाओं से जुड़ी ग्रामीण महिलाओं में सामाजिक गतिशीलता एवं परिवर्तन पाया जाता है।
- ग्रामीण महिलाओं में विकास योजनाओं से जुड़ाव के कारण उनमें असमानता का प्रभाव कम पाया गया।

शोध विधि– शोधकार्य हेतु म.प्र. के पन्ना जिले का चयन उद्देश्य पूर्ण पद्धति से किया गया है।

अध्ययन हेतु पन्ना जिले के पांच विकासखण्ड में पन्ना विकासखण्ड का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया है।

उपकरण– साक्षात्कार, अनुसूची, प्रश्नावली।

तालिका–1: आय के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.	आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत
1.	युवक वर्ग (18-30)	45	22.50
2.	मध्यम वर्ग (31-45)	75	37.50
3.	वृद्ध वर्ग (46-60)	80	40.00
	कुल	200	100.00

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक महिला उत्तरदाता 46-60 वर्ष से संबंधित हैं। इस प्रकार आयु वर्गों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययन में भागीदारी आयु के साथ-साथ व्यक्तिगत कारकों से प्रभावित हो सकती है।

तालिका–2: शासन द्वारा चलाई जा रही महिला विकास योजना के बारे में जानकारी का वर्गीकरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	120	60.0
2.	नहीं	80	40.00
	कुल	200	100.00

उपयुक्त तालिका से स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत महिलाओं को योजना के बारे में जानकारी है। 40 प्रतिशत महिलाओं को विकास योजनाओं की जानकारी नहीं है।

तालिका–3: शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं से महिला उत्तरदाता को प्राप्त होने वाले लाभ वर्गीकरण

क्र.	विवरण	संख्या	प्रतिशत
1.	आर्थिक सहायता	120	60.0
2.	स्वरोजगार का अवसर	51	25.50
3.	प्रशिक्षण/कौशल विकास	30	15.00
4.	स्वास्थ्य सुविधाएं	100	50.00
5.	शिक्षा/छात्रवृत्ति	40	20.00
6.	आवास/गैस/राशन	129	64.50
7.	सामाजिक सम्मान/पहचान	60	30.00

उपयुक्त तालिका से स्पष्ट है कि आर्थिक सहायता स्वरोजगार के अवसर एवं प्रशिक्षण कौशल एवं स्वास्थ्य सुविधाएं और आवास का लाभ प्राप्त हो रहा है।

सुझाव– पन्ना जिले की ग्रामीण महिलाओं पर विकास योजनाओं का अध्ययन करने के पश्चात निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं–

1. ग्राम स्तर पर जागरूकता शिविर, दीवार लेखन, महिला समूह बैठकों और पंचायतों के माध्यम से योजनाओं की जानकारी पहुँचाई जाए।
2. योजनाओं से जुड़ी गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु उन्हें कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया जाए।
3. स्वयं सहायता समूहों को वित्तीय संसाधनों, बैंकिंग सुविधाओं को दिया जाए।

निष्कर्ष– योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को रोजगार और स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हुए जिससे आर्थिक आत्म निर्भरता बझी है। जननी सुरक्षा योजना और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं मातृ एवं शिशु मृत्युदर में कमी आयी है और स्वासथ्य सोवाओं की पहुँच बेहतर हुयी है योजनाओं से जुडे प्रशिक्षण से महिलाओं की शिक्षा एवं अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. योजना, अंक अप्रैल 2019
2. कुरूक्षेत्र, जनवरी, 2016
3. दैनिक भास्कर समाचार पत्र।
4. बंग ठाकुरदास, 1997 हमारे गाँव में हम सरकार, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी।

****